शून्य और सृष्टि

हाइकु रंग वृष्टि

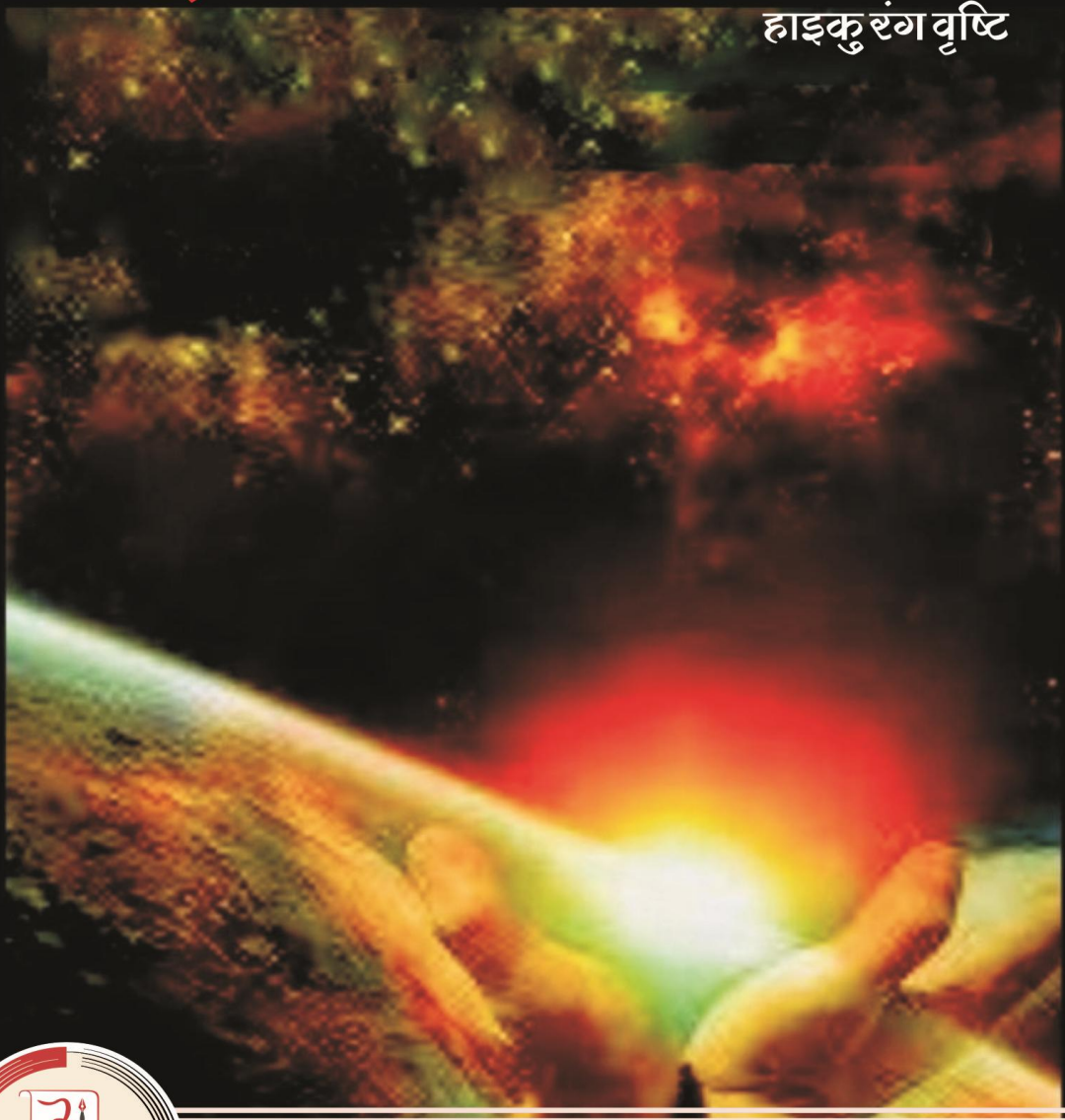

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

हाइकुकार - रंजना राजीव श्रीवास्तव

शून्य और सृष्टि

हाइकु रंग वृष्टि

रंजना श्रीवास्तव

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-037-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक - प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **रंजना श्रीवास्तव**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

SHUNYA OUR SHRISTY BY RANJANA SHRIVASTAVA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में आविा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

"हाइकु" मूलतः जापानी ०५/०७/०५ त्रिपदी सिलेबिक काव्य-रूप है । वर्तमान समय में यह काव्य-रूप जापान की सीमाएँ लाँघ कर समूचे विश्व-साहित्य का महत्वपूर्ण अंग बन चुका है । जापानी हाइकुओं में प्रकृति चित्रों के माध्यम से जीवन के शाश्वत और सार्वभौमिक सत्य की आध्यात्मिक व्याख्या हुई है । सम्प्रति हिन्दी हाइकु भी अपने भाव-वैभव व अपनी शैल्पिक आभा से सुदृढ़ आधार के साथ हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं ।

हिन्दी हाइकु कवयित्री आ. रंजना श्रीवास्तव जी की रचनाधर्मिता से मैं पूर्व अवगत हूँ । उनके कई हाइकु, तांका व चोका इत्यादि रचनाएँ मेरे द्वारा सम्पादित ग्रन्थों में प्रकाशित हुई हैं। उनकी रचनाओं में विषय वैविध्य होता है। प्रसन्नता का विषय है कि प्रस्तुत पुस्तक 'शून्य और सृष्टि - हाइकु रंग वृष्टि' के हाइकुओं में भी रंजना जी ने विषय वैविध्य व सम्पन्न उच्च भाव-बोध के साथ विभिन्न विषयों जैसे नैसर्गिक अठखेलियाँ, दिवस व रात्रि के आठों प्रहर, ऋतु वर्णन, सृष्टि की उत्पत्ति, विकास व प्रलय की बातें, हिन्दी महीनों की विशिष्टताएँ, सूर्य-चन्द्र की विभिन्न अवस्थाएँ इत्यादि से जुड़ी सधी भाव लहरियों को शब्द प्रदान करते हुए पूर्ण कसावट के साथ हाइकुओं की रचना की है।

'शून्य और सृष्टि - हाइकु रंग वृष्टि' में अभिधा, लक्षणा व व्यंजना तीनों भाव के हाइकु समाहित हैं। कुछ उत्कृष्ट हाइकु जो मन को प्रभावित करते हुए सहज मोह रहे हैं, द्रष्टव्य हैं ...

द्वन्द्व था छिड़ा
सूरज मेघा मध्य
नभ अखाड़ा।

धरती गर्भ
बीज अलंकरण
प्रसव वेला।

कोंपल जन्मा
उर्वरित ममत्व
माटी की कोख।

माता की माया
कौन समझ पाया?
प्रेम समाया।

भोर उनींदी
रक्त नेत्र मार्तण्ड
उदित प्राची।

मले नयन
रक्त श्याम क्षितिज
जागे भास्कर।

इन हाइकुओं के अतिरिक्त बहुत से अच्छे सधे हुए हाइकु इस संग्रह में संग्रहीत हुए हैं, जिस हेतु निःसंदेह विदुषी हाइकु कवयित्री आ. रंजना श्रीवास्तव जी बधाई की पात्र हैं । संग्रह से मैं पूर्णतः आश्वस्त हूँ कि हिन्दी हाइकु जगत में रंजना जी के इस हाइकु संग्रह का तह-ए-दिल से स्वागत होगा । मैं हाइकु कवयित्री आ. रंजना जी को उनके उत्कृष्ट हाइकुओं के संग्रह 'शून्य और सृष्टि-हाइकु रंग वृष्टि' के प्रकाशन के अवसर पर अशेष शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए साहित्य जगत में उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभाशीष प्रदान करता हूँ।

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'
साहित्य प्रसार केन्द्र साँकरा
जिला - रायगढ़ (छत्तीसगढ़)
Mob- ७८२८१०४१११

'शून्य और सृष्टि - हाइकु रंग वृष्टि'

परिकल्पना ..

जीवन की अपनी-अपनी परिभाषाएँ हैं। इसे जिसने जैसे देखा, वैसा पाया। सृष्टि-निर्माण के पीछे दृष्टि महत्त्वपूर्ण होती है। जीवन को परम उपलब्धि मानते थे भारतीय ऋषि। वे जन्म से लेकर मृत्यु के बीच के अंतराल को ऐसा साधन बनाने की युक्ति बताते थे, जिससे कोई भी इन दोनों स्थितियों से पार जा सकता था। जिसके सामने जीवन पारदर्शी दर्पण के समान है, हस्तामलकवत् स्पष्ट है, वही सौभाग्यवान् है, क्योंकि उसकी राह उत्तरोत्तर एकमात्र गन्तव्य की ओर जाती है। उसने वह पा लिया है जिससे जीवन को सही परिभाषा मिलती है।

मन ज्ञान का आलय है। जब यह आलय समस्त ज्ञान से रिक्त होकर शून्य हो जाता है और देखा-सुना जाना-समझा सब छूट जाता है, तब उस अवस्था में जिज्ञासा का प्रादुर्भाव होता है, और यही जिज्ञासा सत्य को जन्म देने में समर्थ होती है। तब शून्य में समाने के लिए शून्य बनना पड़ता है।

शून्य से ही नाद है और शून्य से ही शब्द है।
शून्य के बिन प्राण मन संवेदना निःशब्द है।।

कल्पनाएँ, भावनाएँ, मौन इत्यादि सब शून्य की सार्थकता में समाहित होते हैं। शून्य से सृष्टि का प्रारम्भ होता है और शून्य पर ही इसका अन्त होता है। बालक जन्म के पल शून्य की अवस्था में होता है, तत्पश्चात सारी क्रियाएँ उसे शून्य से दूर करती जाती हैं, किन्तु देहावसान की स्थिति में पुनः शरीर शून्य हो जाता है। इतिहास साक्षी है कि गौतम बुद्ध व महावीर स्वामी जैसे भी सिद्ध पुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने जीवनकाल में ही आत्मबोध कर लिया और शून्य को अपना गन्तव्य बना लिया।

इसी तर्ज पर रचा गया- हिन्दी हाइकु संग्रह- 'शून्य और सृष्टि-हाइकु रंग वृष्टि' मेरा नवल प्रयास है, जिसके माध्यम से मैंने पंचांग और कालक्रम की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन करते हुए शून्य से उत्पन्न सृष्टि, सम्पूर्ण दिवस-चक्र, आठों प्रहर तथा उससे जुड़ी यादों को धरातल प्रदान करना चाहा है। जीवन में आनन्द के महत्व को कलात्मक और अलंकारिक शैली में प्रस्तुत करने का साहस किया है। शून्य से उत्पन्न जीवन-प्रदायिनी प्रकृति, छोटे छोटे जीव-जन्तु, ऋतुओं, अणुओं की उत्पत्ति, विकास और विनाश इत्यादि का वर्णन मैंने अपने पाठकों एवं प्रशंसकों के प्रोत्साहन के साथ नयी पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास किया है। ज्ञान, दर्शन और कला तीनों के सम्मिश्रण से निर्मित यह पुस्तक आज की वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाली युवा पीढ़ी के समक्ष नया दृष्टिकोण रखने में सक्षम होगी, यही आशा है।

जापानी त्रिपदी सिलेबिक ५-७-५ अर्थात मात्र १७ वर्णों में रचित हिन्दी हाइकु श्रृंखला में 'धुंध के पार' (हाइकु : काव्य बोन्साई) के पश्चात् प्रस्तुत है मेरा नवीन प्रयास -'शून्य और सृष्टि - हाइकु रंग वृष्टि' ..

सभी भाषा प्रेमी पाठकों को समर्पित ..

हाइकु कवयित्री
रंजना श्रीवास्तव, नागपुर
संपर्क - ९०९६८०८१९१

अनुक्रमणिका

1.	सर्ग १ - कालक्रम (पंचांग से श्रद्धा तक)	6-8
2.	सर्ग २ - सुखद सबेरा (सुप्रभात काल से मध्याह्न काल तक)	9-11
3.	सर्ग ३ - धूप अवगाहन (गुनगुनी धूप से चिलचिलाती धूप तक)	12-14
4.	सर्ग ४ - रात सुहानी (नवोढ़ा गोधूलि वेला से प्रौढ़ा शर्वरी तक)	15-17
5.	सर्ग ५ - आकाशीय प्रेम (रुमानी मेघों से लजाती वृष्टि तक)	18-20
6.	सर्ग ६ - प्रकृति के सान्निध्य में (मिलन से उत्पत्ति तक)	21-23
7.	सर्ग ७ - कलकल जल (नदी समर्पण से सागर आलिंगन तक)	24-26
8.	सर्ग ८ - जीव अस्तित्व (द्विपद सौन्दर्य से षट्पद स्वरूप तक)	27-29
9.	सर्ग ९ - यादों की दस्तक (विस्मृति से स्मृति तक)	30-32

सर्ग - १

कालक्रम

हिन्दू पंचांग की उत्पत्ति वैदिक काल में ही हो चुकी थी। सूर्य को जगत की आत्मा मानकर उक्त काल में सूर्य व नक्षत्र के सिद्धान्त पर आधारित पंचांग बनाया गया। वैदिक काल के पश्चात् आर्यभट, वराहमिहिर, भास्कर आदि जैसे खगोलशास्त्रियों ने पंचांग को विकसित कर उसमें चन्द्र की कलाओं का भी वर्णन किया। वेदों और अन्य ग्रन्थों में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी और नक्षत्र सभी की स्थिति, दूरी और गति का वर्णन किया गया है, जिनकी गणना से ही पृथ्वी पर होने वाले दिन-रात और अन्य सन्धि-काल को विभाजित कर एक पूर्ण सटीक पंचांग बनाया गया।

पंचांग काल, दिन को नामाँकित करने की एक प्रणाली है। पंचांग के चक्र को खगोलीय तत्वों से जोड़ा गया। बारह मास का एक वर्ष और ७ दिन का एक सप्ताह रखने का प्रचलन विक्रम संवत् से शुरू हुआ। महीने का हिसाब सूर्य व चन्द्रमा की गति से रखा जाता था। पाँच प्रमुख भागों से बने होने के कारण काल गणना का नाम पंचांग पड़ा - तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण। इनकी गणना के आधार पर हिन्दू पंचांग की तीन धाराएँ हैं - पहली चन्द्र आधारित, दूसरी नक्षत्र आधारित और तीसरी सूर्य आधारित कैलेण्डर पद्धति। भिन्न-भिन्न रूप में यह पंचांग सम्पूर्ण भारत में माना जाता है। एक साल में १२ महीने होते हैं। प्रत्येक महीने में १५-१५ दिन के दो पक्ष होते हैं- शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष। प्रत्येक वर्ष में दो अयन होते हैं- उत्तरायण और दक्षिणायन। इन दोनों अयनों की राशियों में २७ नक्षत्र भ्रमण करते रहते हैं।

आज के वैज्ञानिक एवं वैश्वीकरण के इस युग में मानव चाहे कितना भी आधुनिक हो गया हो, फिर भी बच्चे के जन्म, नामकरण, विवाह से लेकर नई कार, नया घर खरीदने के लिए आज भी पंचांग की तिथियों और मुहूर्त का ही आश्रय लेता है।

हाइकु : पंचांग से श्रद्धा तक

पंचांग बिन्दु
ज्योतिष है वैदिक
अंक लौकिक ।।१।।

तिथि नक्षत्र
प्रचलित पंचांग
काल विज्ञान ।।२।।

हिन्दू पंचांग
चित्रा नक्षत्र समा
चैत्र पूर्णिमा।।३।।

वैशाख मास
क्षिप्रा नर्मदा स्नान
आध्यात्म खास ।।४।।

ज्येष्ठ प्रताप
प्रचण्ड सूर्य ताप
करें विश्राम ।।५।।

संध्या आषाढ़ी
शयन एकादशी
विष्णु विश्राम ।।६।।

श्रावण माह
शिव सती विवाह
स्तुति माहात्म्य ।।७।।

कल्याणमयी
कृष्ण गणेश पूजा
भादों में निष्ठा ।।८।।

आश्विन तन्द्रा
मेघ थे अलसाए
नहीं बरसे ।।९।।

कार्तिक मास
शरद पूर्णिमा खास
चन्द्र विकास ।।१०।।

पर्व प्रवास
मार्गशीर्ष है मास
संक्रान्ति स्नान ।।११।।

पौष नमन
सूर्योपासना माह
शीतागमन ।।१२।।

मासों में माघ
कल्पवास का पुण्य
है अग्रगण्य ।।१३।।

अन्तिम माह
फाल्गुन रंग माह
हर्ष प्रवाह ।।१४।।

अधिक मास
पुरुषोत्तम मास
सत्कर्म योग ।।१५।।

पंचांग चक्र
विक्रम संवत् काल
चन्द्रमा काल ।।१६।।

वैदिक रन्ध्र
जगत आत्मा सूर्य
कलाएँ चन्द्र ।।१७।।

चन्द्र घटित
कला बल में ह्रास
दैहिक त्रास ।।१८।।

निशि श्यामला
अमावस्या कालिमा
छुपा उजाला ।।१९।।

प्रकाश फैला
बालचन्द्र निकला
मेघों की कला ।।२०।।

दुःख नाशक
सोमवार प्रधान
शिव साधक ।।२१।।

मंगलमय
प्रिय मंगल पूजा
है दिन दूजा ।।२२।।

पीत प्रधान
बृहस्पति महान
रखते मान ।।२३।।

जन्म कुण्डली
नक्षत्र ही आधार
चरित्र धार ।।२४।।

खगोल वेत्ता
भास्कर आर्यभट्ट
पंचांग ज्ञाता ।।२५।।

पावन पर्व
चतुर्दशी का पर्व
वैदिक गर्व ।।२६।।

शुक्लपाक्षिक
शर्वरी है रौशन
चन्द्रवर्धन ।।२७।।

शुक्ल पूर्णिमा
अन्तिम तिथि मास
पूर्ण चन्द्रमा ।।२८।।

दुग्ध धवल
पूरनमासी रात
चन्द्रिका साथ ।।२९।।

तारों की रात
कृष्ण नभ के साथ
मौन बारात ।।३०।।

सर्ग - २

सुखद सबेरा

वेदों में सूर्य को जगत की आत्मा कहा गया है। सूर्य से ही धरती पर जीवन संभव है और इसीलिए वैदिक काल से ही भारत में सूर्य की उपासना का चलन रहा है। वेदों की ऋचाओं में अनेक स्थानों पर सूर्यदेव की स्तुति की गई है।

सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा जी के मुख से ऊँ प्रकट हुआ था। वही सूर्य का प्रारम्भिक सूक्ष्म स्वरूप था। इसके बाद भूः भुवः तथा स्वः शब्द उत्पन्न हुए। ये तीनों शब्द पिंड रूप में ऊँ में विलीन हए, तो सूर्य को स्थूल रूप मिला। सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न होने से इसका नाम आदित्य पड़ा।

भानो ! भास्कर ! मार्तण्ड ! चण्डरस्मै।
दिवाकर ! आयुरारोग्यम् ऐश्वर्यं मे देहि भास्कर !
।। ऊँ सूर्यनारायणाय स्वामिने नमः ।।

हम सभी को सूर्य भगवान के उस श्रेष्ठ रूप का प्रातः काल स्मरण करना चाहिए, जो आयु, आरोग्य और ऐश्वर्य प्रदान करने वाले हैं, जिनका मण्डल ऋग्वेद है, तनु यजुर्वेद है और किरणें सामवेद हैं तथा जो ब्रह्मा का दिन है, जगत की उत्पत्ति, विकास और विनाश का कारण है तथा अलक्ष्य और अचिंत्यस्वरूप है।

हाइकु : सुप्रभात काल से मध्याह्न काल तक

पौ फटी पूर्व
रतिया भिनसार।
हाथों में हाथ ।।१।।

भोर सुहानी
तारकों की जुबानी
रात कहानी ।।२।।

नया प्रकाश
स्वच्छ नीला आकाश
दीर्घ प्रश्वास ।।३।।

प्रभात वेला
मौसम भीगा भीगा
सलोनी हवा ।।४।।

ताजा गुलाब
गुलाबी सी सुबह
मित्रों के नाम ।।५।।

शुभ मंगल
सुनहरा प्रभात
सुखद काल ।।७।।

भोर उनींदी
रक्त नेत्र मार्तण्ड
उदित प्राची ।।९।।

उदयाचल
मंथर गतिमान
शिशु सूरज ।।११।।

आयु आरोग्य
ऐश्वर्य दाता भाग्य
भानु वयस्क ।।१३।।

भास्कर वक्ष
रंग रश्मियाँ अक्ष
नियन्ता दक्ष ।।१५।।

सूर्य प्रकाश
धुंधले पड़े तारे
बने बेचारे ।।१७।।

सुबह कोरी
गुलाब इठलाता
क्यूँ चोरी चोरी? ।।६।।

कश्यप पुत्र
जन्मे थे विवस्वान
अदिति गर्भ ।।८।।

मले नयन
रक्त श्याम क्षितिज
जागे भास्कर ।।१०।।

पूर्ण प्रकाश
किशोर तेजोमय
खं सहस्रांशु।।१२।।

ज्योति अवनि
ओज किरण रश्मि
मद्धम रवि ।।१४।।

नभ के कूप
सूरजमुखी धूप
आकाश भूप ।।१६।।

खुद का सूर्य
पाएँ अपनी धूप
अपना रूप ।।१८।।

स्मित मुस्कान
सप्ताश्व आरोहण
जग तारण ।।१६।।

भूत भविष्य
वर्तमान का साक्षी
सूर्य प्रदीप्त ।।२१।।

भानु प्रवास
षट् मासीय उत्तर
षट् दक्खिन ।।२३।।

मेघ ढूँढते
दिवाकर छुपते
खेल खेलते ।।२५।।

सूर्य साधित
आकर्ण थी प्रत्यंचा
नभ छिद्रित ।।२७।।

शीर्ष मध्याह्न
दिवस अपराह्न
अलग छवि ।।२९।।

काल कल्पना
सूर्य आधार माया
तेजस्वी काया ।।२०।।

जग विनाश
अस्तित्व सूर्य बिन
कालकल्पित ।।२२।।

भू एकमेव
रौशन हो सदैव
रवीन्द्र देव ।।२४।।

बाल भास्कर
वारिद ओट झाँकें
खिलखिलाएँ ।।२६।।

शैशव बीता
युवा भानु तेजस्वी
रश्मि ओजस्वी ।।२८।।

काल की गति
परिवर्तित यति
साक्षी नियति।।३०।।

सर्ग -३

धूप अवगाहन

हमारी भारतीय संस्कृति में हजारों वर्षों से सुबह उठकर सूर्य नमस्कार करने की अद्‌भुत परम्परा रही है, क्योंकि उस समय आ रही सूर्य की सौम्य किरणें शरीर के लिए बहुत उपयोगी होती हैं।

सर्दियों के मौसम में तो आवश्यक रूप से धूप अवगाहन करना ही चाहिए। धूप स्नान का पहला उद्देश्य है - पिगमेंट प्राप्त करना। पिगमेंट, एक ऐसी हल्की सी परत है जो नियमित रूप से धूप सेवन करने से त्वचा पर स्वतः ही चढ़ जाती है। ऐसी अवस्था में त्वचा का रंग हल्का बादामी सा हो जाता है। यह रंग धीरे धीरे गहरा होता जाता है। कहते हैं कि त्वचा पर पिगमेंट जितना गहरा होता है, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता उतनी ही अधिक होती है।

सर्दी में प्रतिदिन सहनशक्ति व समयानुसार सुबह से दोपहर बाद तक की धूप का सेवन करना उचित रहता है। सूर्य स्नान के कारण रक्त कोशिकाओं में वृद्धि होने के साथ साथ शरीर का वजन भी बढ़ता है। सूर्य की धूप में मल, विकार, दुर्गन्ध और विष को दूर करने की अद्‌भुत क्षमता विद्यमान है। सूरज की एक-एक किरण में सेहत की रोशनी भरी है।

हाइकु : गुनगुनी धूप से चिलचिलाती धूप तक

मृदु सी धूप
खिड़की से कहती
लो मैं आ गई ।।१।।

हौले से आती
माँ जैसी निहारती
मुख चूमती ।।२।।

सुबह शाम
उजली प्यारी धूप
कमसिन सी ।।३।।

ऊर्जा पसरी
घर आँगन द्वार
जग उद्धार ।।४।।

विस्तृत ओज
सकारात्मक तेज
तम निस्तेज ।।५।।

किरण स्पर्श
सबेरे नजाकत
क्रुद्ध मध्याह्न ।।६।।

दोपहरिया
तपे निर्जना वीथि
अंगार भई ।।७।।

स्वेद मस्तक
टपके टप टप
तर-ब-तर ।।८।।

आनन्द मेला
मार्तण्ड की दावत
उष्मा का रेला ।।९।।

आश्विन मास
ज्येष्ठ का एहसास
मस्तक स्वेद ।।१०।।

व्याकुल खग
जीव मानव मृग
निहारें नभ ।।११।।

देह गदर
चिलचिलाती धूप
प्यासे अधर ।।१२।।

चुप हैं शक्र
पवनदेव भीति
खं राजनीति ।।१३।।

धरना धरे
अकर्मण्य वारिद
बैठे फिजूल ।।१४।।

ले अवकाश
बैठे कोप भवन
फिसड्डी घन ।।१५।।

जिद्दी सूरज
तापमान बढाए
बड़ा सताए ।।१६।।

नदिया सूखी
सूर्यदेव कुपित
आकुल पक्षी ।।१७।।

महा प्रयाण
तन छिद्रित बाण
निस्तेज प्राण ।।१८।।

बैठे निष्काम
वृक्ष तल विश्राम
प्रचण्ड घाम ।।१६।।

शाम पुष्पित
खुशगवार समां
झुका आसमां ।।२१।।

थका सूरज
बन्द पट नीरज
गोधूलि रज ।।२३।।

प्रभा पराई
सूरज की बिदाई
उदासी छाई ।।२५।।

भास्कर ढले
सिन्धुतट फिसले
अनन्त चले ।।२७।।

मसि काजल
क्षितिज लिखे लेख
संध्या आँचल ।।२९।।

संध्या सुहानी
छम छम करती
हौले से आती ।।२०।।

मौसमी हवा
अंगड़ाई ले आई
अँगना छाई ।।२२।।

सूर्यास्त काल
सूर्य क्षितिज भाल
अंबर लाल ।।२४।।

पश्चिम दिशा
सूरज लेता विदा
अस्तित्व निशा ।।२६।।

क्षितिज गाँव
सिन्धु विस्तृत ठाँव
मार्तण्ड पाँव ।।२८।।

उदास दृग
सूर्य पश्चिम प्रति
बोझिल पग ।।३०।।

सर्ग -४

रात सुहानी

सूर्य की रोशनी की तरह चाँद की रोशनी भी हम सबके मस्तिष्क पर काफी ज्यादा प्रभाव डालती है, और यदि वह चाँदनी की रोशनी हो तो क्या ही कहने। चाँदनी की रोशनी में भ्रमण करने से मन की थकान उतर जाती है, शरीर में शीतलता का प्रवाह होता है और मष्तिष्क शान्त हो जाता है।

मानव मन पर दिनचर्या का प्रभाव खूब पड़ता है। हम प्रत्येक कार्य को अपने स्वभाव के अनुसार करते हैं। इससे हमें आत्म-तृप्ति मिलती है। दिन आता है, रातें आती है। समय के अनुसार सब चलता है। ठीक उसी तरह प्रकृति के मध्य चन्दा की झिलमिलाती रोशनी दिल को शुकून देती है।

चाँदनी रात का प्रभाव मन-मस्तिष्क पर पड़ता है। हर जीव चाँद से दो-चार होता रहता है। प्रेम की तरंगें उत्पन्न होती हैं। चकोर की भाँति प्रेमातुर मन चंद्र-दर्शन को उतावला रहता है। रात्रि समय समय पर अपना स्वरूप बदलती रहती है। कभी प्रेयसी, कभी दुल्हन, कभी विरहिणी तो कभी परिपक्व नारी सी दिखाई देती है।

एक बात यह है कि प्रकृति हमेशा से ही मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र रही है, लेकिन दुर्भाग्यवश यह मित्रता केवल एक तरफा है। मनुष्य की ओर से जो मित्रवत् व्यवहार की अपेक्षा की जाती है, उसका कुछ प्रतिशत ही प्रकृति को मिल पाता है। मनुष्य को प्रकृति को समझना चाहिए और उसका मोल जान लेना चाहिए। यदि ऐसा हो गया तो, यह सम्पूर्ण पृथ्वी स्वर्ग से भी अधिक खूबसूरत हो जाएगी।

हाइकु : नवोढ़ा गोधूलि वेला से प्रौढ़ा शर्वरी तक

संध्या वंदन
श्यामा गोधूलि वेला
वक्त नवेला ।।१।।

कृष्णा सी रात
नेह सिंचित बात
प्रफुल्ल गात ।।२।।

क्षितिज धरा
मिलन है गहरा
प्रेम में पगा ।।३।।

पश्चिम ओर
दूसरा नभ छोर
रक्ताभ कोर ।।४।।

श्याम क्षितिज
गहराया भौं भींच
आँखों को मींच ।।५।।

शाम का समां
पक्षी अभिभावक
नीड़ शावक ।।६।।

किरणें लौटीं
उदास कमलिनी
सिमट चली ।।७।।

लक्ष्मी पूजन
स्वच्छ वातावरण
संध्या अर्चन ।।८।।

दीप जलाओ
मंगल गीत गाओ
पर्व मनाओ ।।९।।

गर्व खण्डित
देव भोग मण्डित
पूज्य पण्डित ।।१०।।

रात नशीली
नैनन नींद सजे
स्वप्न जगे ।।११।।

सुनभनील
सुरमई नयन
काजल लीक ।।१२।।

रात आँचल
गहराया काजल
बजी पायल ।।१३।।

चन्द्र यामिनी
नख शिख कामिनी
रूप दामिनी ।।१४।।

स्याह सी रात
ले दूध के दो दाँत
किलके चाँद ।।१५।।

चन्द्र शेखर
उर्ध्व विपुल नभ
प्रभा प्रखर ।।१६।।

चारु चाँदनी
चंचल चितवन
सौम्य रागिनी ।।१७।।

देख चाँदनी
मन्द मुस्काया चाँद
कान्ति अपनी ।।१८।।

नवोढ़ा रात्रि
रुनकझुन ध्वनि
वधू अवनि ।।१९।।

कृष्ण योगिनी
नवेली सुयामिनी
मत्त मोहिनी ।।२०।।

दुल्हन रात
सेहरे में था चाँद
लजाया गात ।।२१।।

मुँदे नयन
दीर्घ गहरी श्वास
घुले प्रश्वास ।।२२।।

मुग्ध चन्द्रमा
अपलक निहारे
चारु चन्द्रिका ।।२३।।

तारे शताक्षी
रतनारी कामाक्षी
प्रहर साक्षी ।।२४।।

विदा ले चली
प्यासे नैन यामिनी
नार कामिनी ।।२५।।

गमन काल
अश्क लुढ़के गाल
बिखरे बाल ।।२६।।

रात्रि प्रहर
घना तीसरा काल
मौन प्रखर ।।२७।।

प्रेमिणी चली
शर्वरी चौथे काल
विनीत भाल ।।२८।।

भोर दस्तक
रजनी विदा काल
कपोल लाल ।।२९।।

प्राची पौ फटी
प्रणय रात कटी
चाँद धूमिल ।।३०।।

सर्ग - ५

आकाशीय प्रेम

झुलसा देने वाली गर्मी और उमस के बाद सावन की ऋतु में आकाश और धरा का प्रेम परवान चढ़ता है। सावन की ठंडी बयार सबको भली लगती है। कभी रिमझिम हल्की फुहार, कभी घनघोर घटाओं का खूब बरसना, सारी प्रकृति धुल कर निखरी सी लगने लगती है। प्रकृति की सुन्दरता मन मोह लेती है। सचमुच ऊपरवाले से बड़ा कोई चित्रकार नहीं है।

बारिश की फुहारों को देख कर किसका मन नहीं मचल जाता होगा! पानी की बूंदों को छूकर हम बचपन की हसीन यादों, मिट्टी की सोंधी खुशबू में खो जाते है। कोई भी व्यक्ति चाहे वो किसी भी उम्र का हो उसके अन्दर एक मासूम बच्चा होता है जो बारिश में भीगने को मचल जाता है।

वर्षा का मानव जीवन में बेहद ही महत्व है क्योंकि पानी के बिना जीवन संभव नहीं है। वर्षा से फसलों के लिए पानी मिलता है तथा सूखे हुए कुएँ, तालाबों तथा नदियों को फिर से भरने का कार्य वर्षा के द्वारा ही किया जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि जल ही जीवन है। इस मौसम में छोटे-छोटे जीव-जन्तु जो गर्मी के मारे जमीन के नीचे छिप जाते हैं, बाहर निकल जाते हैं। मेंढ़क की टर्र-टर्र की आवाज सुनाई पड़ने लगती है।

आकाश में बादल अपने युवा अंदाज में छाए रहते हैं और लजाती शर्माती बारिश मेघों का हाथ थाम कर चल पड़ती है और अन्ततः प्रणय विदित हो जाता है।

हाइकु : रुमानी मेघों से लजाती वृष्टि तक

रंग चुनावी
नभ में राजनीति
विजय नीति ।।१।।

द्वन्द्व है छिड़ा
मध्य सूरज मेघा
नभ अखाड़ा ।।२।।

मेघों की रार
इन्द्र की सरकार
मन्त्रणागार ।।३।।

बाल भास्कर
जा बैठा छुपकर
मेघ नगर ।।४।।

कृषक नैन
आशा दिवस रैन
जलद बैन ।।५।।

धरा संताप
समुद्र गर्म भाप
बादल थाप ।।६।।

मेघ मल्हार
काँपती बूँद रव
नृत्य विहार ।।७।।

मेघा बरसे
माटी गन्ध लहके
हिया महके ।।८।।

वर्षा आँगन
धरती आलिंगन
माटी मर्दन ।।९।।

बूँदिया मोती
छितरे बिखरते
उर भिगोते ।।१०।।

मेघ गर्जन
करें बूँद नर्तन
औंधे बर्तन ।।११।।

आर्द्रता सृष्टि
नेह सिंचित वृष्टि
भावना दृष्टि ।।१२।।

युवा थे मेघ
अंदाज भी रुमानी
प्रीति बयानी ।।१३।।

साँवला समां
हुँकार अगवानी
मेघ नूरानी ।।१४।।

बदरी दौड़ी
हर लिया संताप
आँचल ढाँप ।।१५।।

प्यार की आब
वृष्टि देह शबाब
नैन शराब ।।१६।।

यौवन चाल
कृष्ण केश कपाल
वारिद भाल ।।१७।।

माटी चन्दन
वर्षा अभिनन्दन
उर स्पन्दन ।।१८।।

घुमड़ा चला
मेघों का युवा जोश
भू प्रति आया ।।१९।।

आह्वान मेघ
गरजे प्रीत भूल
शलाका शूल ।।२०।।

वर्षा ने भाँपा
प्रेम किया कुबूल
बरसे फूल ।।२१।।

वर्षा प्रभात
दिवस है या रात
स्थिति प्रपात ।।२२।।

सर्द हवाएँ
स्पर्श सनन सन
मगन मन ।।२३।।

मुख चूमती
ऋतु अंग लगाती
गाहे बगाहे ।।२४।।

सावन माह
विरह व्यथा आह
उर कराह ।।२५।।

मेघ आभार
सुरक्षा का आधार
बूँद बौछार ।।२६।।

ताल तलैया
कर्गद बाल नैया
नेह बलैया ।।२७।।

मनभावन
हरियाला सावन
अवगाहन ।।२८।।

धरा का गर्भ
जीव मनाएँ पर्व
मातृत्व गर्व ।।२९।।

वृष्टि आभार
संचित जलागार
पूर्ति प्रभार ।।३०।।

सर्ग -६

प्रकृति के सान्निध्य में

एक छोटे से शब्द "प्रकृति" में कितना कुछ समाया हुआ है कि कोई सोच भी नहीं सकता। प्रकृति के अन्तर्गत वायु, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदियाँ, सरोवर, झरने, समुद्र, जंगल, पहाड़, खनिज आदि और न जाने कितने प्राकृतिक संसाधन आते हैं। इन सभी से हमें श्वास लेने के लिए शुद्ध हवा, पीने के लिए पानी, भोजन आदि जो जीवन के लिए नितान्त आवश्यक हैं, उपलब्ध होते हैं।

प्रकृति से हमें जीवन जीने की उमंग मिलती है। बसन्त देख कर दिल खुश होता है, सावन में रिमझिम बरसात मन को मोह लेती है, इंद्रधनुष हमारे अंतस् में रंगीन सपने सजाता है। प्रकृति हमें शारीरिक सुख-सुविधा के साथ-साथ मानसिक सुख भी देती है, पर हमारे पास प्रकृति को देने के लिए कोई वस्तु नहीं है। यदि कुछ है तो वह सिर्फ इतना कि हम इसका संरक्षण कर सकें।

सूर्य की पहली किरण से लेकर चाँद की चाँदनी तक, खुले मैदानों से लेकर जंगल और पहाड़ों तक, नदी के कल-कल मधुर संगीत से लेकर समुद्र में उठती लहरों, पेड़ पर बैठी चिड़िया की चहचहाहट या जो भी हमारे आसपास उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन हैं, हमें सबका अनुभव करना चाहिए और आनन्द उठाना चाहिए क्योंकि जब तक हमें इसके महत्व का बोध नहीं होगा तब तक हमारे लिए यह महत्व का विषय नहीं हो सकती।

किसी चित्रकार, कवि, लेखक और कलाकारों के भाव तभी जागृत होते हैं जब वह प्रकृति की गोद में शान्त वातातरण में कल्पना करता है, तभी वह उसे कागज पर उतारता है। इसके बिना तो जीवन में रंग भी नहीं है। जब इंसान मशीनी जीवन जीते-जीते ऊब जाता है, तो प्रकृति की गोद में जाकर सुकून की साँस लेना चाहता है।

हाइकु : मिलन से उत्पत्ति तक

पितृतुल्य है
आकाश की ये छाँव
निश्चिन्त ठाँव ।।१।।

क्षितिज पर
नभ धरा का मेल
साँवला खेल ।।२।।

आसमां झुका
मुख चूमता धरा
निहाल हुआ ।।३।।

अवनि माया
अंकुर गर्भ आया
बदली चाल ।।४।।

गर्भ रक्षण
धरा का अन्तर्मन
सहेजे तन ।।५।।

धरती गर्भ
बीज अलंकरण
जन्म संदर्भ ।।६।।

कोंपल माटी
ममत्व उर्वरित
कोख जनित ।।७।।

काँपे अधर
प्रसव की गदर
जन्मा अंकुर ।।८।।

सुत अजन्मा
कसमसाता जन्मा
पर्ण अँगना ।।९।।

नव कोंपल
अंक शाख कोमल
स्मितनिश्छल ।।१०।।

सृष्टि है सौम्य
ममतामय कर्म
रक्षण धर्म ।।११।।

हवा का साया
पत्र रक्त कपोल
सिहर गया ।।१२।।

शाख कोंपल
भयभीत पुकार
पत्तों के द्वार ।।१३।।

पुष्प प्रवास
कलियों की सुवास
सृष्टि विकास।।१४।।

अनोखी अदा
किलके मुख चूमे
कुसुम झूमे ।।१५।।

सुगन्ध फैले
हर शै भी महके
फिजा बहके ।।१६।।

शिशिर काल
कमल गट्टा नाल
औषध जाल ।।१७।।

सरसों फूले
महुआ टेसू खिले
फागुन ऋतु ।।१६।।

सृष्टि सहेली
जूही चम्पा चमेली
माटी में खेली ।।२१।।

पंखुड़ी रंग
गुलाबी हवा अंग
सुगन्ध संग ।।२३।।

गर्भस्थ जन्तु
जन्मे सावन ऋतु
मृत्तिका मृदु ।।२५।।

पहली वृष्टि
चमचमायी सृष्टि
हरित वर्णा ।।२७।।

क्षितिज पर
इन्द्रधनुष छाया
लावण्य आया ।।२६।।

कदम्ब गन्ध
कचनारिया स्पर्श
उर में हर्ष ।।१८।।

देव मस्तक
चढ़ा पुष्प हृदय
भाग्य उदय ।।२०।।

सूरजमुखी
कहे सूर्य कहानी
छटा सुहानी ।।२२।।

वर्षा की बान
पादप जलपान
जीवनदान ।।२४।।

सीली बयार
माटी गन्ध महके
विचार जन्मे ।।२६।।

तितली शोभा
सुमन रस आभा
पराग प्रभा ।।२८।।

मन स्वरूप
चित्र छटा अनूप
प्रकृति रूप ।।३०।।

सर्ग - ७

कलकल जल

नदी भूतल पर प्रवाहित एक जलधारा है, जिसका स्रोत प्रायः कोई झील, हिमनद, झरना या बारिश का पानी होता है जिसका परम उद्देश्य किसी सागर अथवा झील में गिरना और समर्पित होना है।

नदी पानी का एक प्राकृतिक संसाधन है, जो हमें स्वच्छ जल उपलब्ध करवाती है। नदियाँ सर सर की आवाज के साथ बहती हैं। इन्हें सरिता, प्रवाहिनी आदि नामों से भी जाना जाता है। जिस स्थान पर नदियों का जन्म होता है उसे नदी का उद्गम कहते हैं और जहाँ पर नदी की धारा बहती है उसे नदी घाटी कहा जाता है। पहाड़ो पर जमी बर्फ पर सूर्य की किरणों के पड़ने से नदी उत्पन्न होती हैं। यह कभी झरनों के रूप में बहती है, तो कभी नहरों और नदियों के रूप में। चट्टानों से टकराकर यह अपना रूख बदल लेती हैं। नदी के साथ मनुष्य का गहरा सम्बन्ध है। नदियों से केवल फसल ही नहीं उपजाई जाती है बल्कि नदियाँ सभ्यता को जन्म देती हैं और उसका लालन-पालन भी करती हैं। इसलिए मनुष्य हमेशा नदी को देवी के रूप में देखता आया है।

नदी अपने जीवन काल में युवावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था से गुजरती है। वह प्राकृतिक एवं प्रकृति नियन्त्रित व्यवस्था है, जो वर्षाजल, सतही जल तथा भूजल को सन्तुलित रख, अनेक सामाजिक तथा आर्थिक कर्तव्यों का पालन करती है। वह जागृत इको-सिस्टम है। नदी पर निर्भर समाज के लिये वह आजीविका का आधार है। कुदरती तौर पर नदी का प्रवाह अविरल होता है। सूखे के दिनों में उसका प्रवाह धीरे-धीरे कम होता है। नदी में रहने वाले जीव-जन्तु और वनस्पतियाँ उस बदलाव से परिचित होते हैं। इसलिये कुछ उस बदलाव के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं तो कुछ अन्य इलाकों में पलायन कर जाते हैं।

हाइकु : नदी समर्पण से सागर आलिंगन तक

तोड़ती कारा
भूतल प्रवाहित
जल की धारा ।।१।।

नदिया जल
प्रकृति संसाधन
प्रदत्त बल ।।२।।

प्रगतिशील
निर्बाध प्रवाहित
नदिया नील ।।३।।

जन्म तटिनी
उद्गम प्रवाहिनी
वेग धारिणी ।।४।।

नदी लालन
सत्य धर्म पालन
भवतारण ।।५।।

नदी अर्चन
देवी सम रक्षण
छठ पूजन ।।६।।

जलदायिनी
सम्बन्ध प्रगाढ़िनी
प्राणदायिनी ।।७।।

हिममण्डित
गिरि उर्ध्व शिखर
बहे प्रखर ।।८।।

जल अवस्था
धृत इको सिस्टम
जीव व्यवस्था ।।९।।

जीव निर्वाह
गतिशील सर्वदा
संग प्रवाह ।।१०।।

नौका चालन
आजीविका आधार
मत्स्य व्यापार ।।११।।

निज कर्तव्य
स्वच्छता संरक्षण
मातृ रक्षण ।।१२।।

शीत प्रचुर
प्रवाह अविरल
ग्रीष्म विकल ।।१३।।

चेनाब ऋद्धि
चन्द्रभागा प्रसिद्धि
स्पर्श में सिद्धि ।।१४।।

तटिनी डेरा
कावेरी जल धारा
दक्षिण फेरा ।।१५।।

निर्झर नदी
गीत संगीत ताल
शुष्क अकाल ।।१६।।

रोषोन्मूलन
सतह सन्तुलन
भारोत्तोलन ।।१७।।

बारिश रौद्र
रुद्र शिव का रूप
नदी स्वरूप ।।१६।।

प्रयाग गंगा
सरस्वती अदृश्या
संग यमुना ।।२१।।

कालिन्दी नदी
नतोन्नत बहती
पापनाशिनी ।।२३।।

नदिया धारा
करधन सँवारा
स्वरूप न्यारा ।।२५।।

जल प्रपात
अनन्त है प्रवाह
गति निर्बाध ।।२७।।

सिन्धु प्रशान्त
भीषण कभी शान्त
नदी का कान्त ।।२६।।

पंजाब क्षेत्र
व्यास जल सिंचित
धान्य पूरित ।।१८।।

हरि के द्वार
पूजन गंगा धार
शुद्ध प्रकार ।।२०।।

दिल्ली यमुना
कलकल निनाद
है श्यामवर्णा ।।२२।।

गोमती धार
नवाबी है विहार
प्राण संचार ।।२४।।

तूफानी नदी
गोरी दुल्हनिया सी
अल्हड़ चली ।।२६।।

विरही नदी
निस्तब्ध चाँद रात
नीरव जल ।।२८।।

तरंग थाह
समन्दर का प्रवाह
योग गवाह ।।३०।।

सर्ग - ८

जीव अस्तित्व

ईश्वर निर्मित प्रकृति को यदि नजर भर कर देखें, तो चारों ओर सुंदर, रंग-बिरंगे पक्षी, कीट पतंगे व पशु दृष्टिगत होते हैं, जिनकी शारीरिक संरचना और उपादेयता प्रकृति में सन्तुलन बनाए रखती है। तितली, भँवरे, टिड्डे, झिंगुर, मेंढक, घोंघा, चिड़िया, कौवे, मैना, मुर्गे, गाय बछड़े, शेर-- छोटे से बड़े तक सब अपने नियत कर्म में लिप्त रहते हैं। उत्पत्ति, विकास और विनाश की प्रक्रिया चक्रवत् चलती रहती है।

बहुत से कीटों और पौधों का सम्बन्ध अन्योन्य होता है। ऐसे कीट, पराग और मकरन्द पुष्पों से प्राप्त करते हैं। पुष्पों में भी कीटों को आकर्षित करने के लिए रंग और सुगंध होती है। कुछ पुष्पों की रचना ऐसी होती है कि कीट बिना पराग एकत्र किए मकरन्द प्राप्त कर ही नहीं सकता।

प्रत्येक जीव का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व होता है। अपनी कार्यशैली होती है। प्रकृति अपनी प्रत्येक सन्तान से समान स्नेह करती है। जीवन चक्र लगातार चलता रहता है। जीवों में किसी प्रकार की होड़ नहीं होती। अपनी श्रेष्ठता कोई सिद्ध नहीं करता। प्रत्येक के अस्तित्व से ही प्रकृति में विविधता और सौंदर्य बना रहता है।

हाइकु : द्विपद सौन्दर्य से षट्पद स्वरूप तक

मेरे अँगना
भोर संदेशा लाती
पक्षी प्रभाती ।।१।।

खग श्रमिक
चोंच तिनका लाते
नीड़ बनाते ।।२।।

वृक्ष कोटर
शिशु नैन तितिक्षा
मात प्रतीक्षा ।।३।।

चिड़िया आई
पंख फड़फड़ाती
मुँडेर बैठी ।।४।।

घोंसला मैना
नर मादा रक्षक
दिवस रैना ।।५।।

कोयल कूके
अमवा डार पात
श्यामल गात ।।७।।

प्यासा चातक
स्वाति नक्षत्र आस
बुझाए प्यास ।।९।।

झिंगुर रव
ढूँढे निस्तब्ध रात
दाना सौगात ।।११।।

मुर्गे की बांग
सुबह लगे न्यारी
निद्रा भी प्यारी ।।१३।।

चींटी कतारें
गन्तव्य तक जातीं
साथ निभातीं ।।१५।।

जवा कुसुम
इन्द्रधनुषी रंग
तितली अंग ।।१७।।

पिंजरा पाखी
छिन गई आजादी
अंग बैसाखी ।।६।।

पपीहा पापी
पिउ पिउ पुकारे
पिया के द्वारे ।।८।।

गोधूलि वेला
पक्षी गन्तव्य नीड़
शिशु अकेला ।।१०।।

रात की रानी
संग जुगनू राजा
प्रेम की बानी ।।१२।।

पिपासु कागा
श्रम बुद्धि परीक्षा
नैतिक शिक्षा ।।१४।।

मधुमक्खियाँ
पराग लेकर आईं
छत्ता बनातीं ।।१६।।

चूमे आनन
स्पर्श रक्त राजीव
रसिक जीव ।।१८।।

गुंजन गीत
तितली पुष्प मीत
नैना लुभाए ।।१६।।

गन्ध लहकी
युवा कली चटकी
अलि खटकी ।।२०।।

तितली गन्ध
भ्रमर अनुबन्ध
कली लजाई ।।२१।।

उनींदी कली
अधर रसपान
गुंजार गान ।।२२।।

अलि सन्तुष्ट
मादक नैन तुष्ट
पुनः निहारे ।।२३।।

पराग पान
स्वर्ग सम भान
भौंरा विहान ।।२४।।

यौवन नाद
प्रेममय निनाद
नैन संवाद ।।२५।।

नन्दिनी धेनु
सुरभि कामधेनु
विशिष्ट धेनु ।।२६।।

मातृवत्सला
गो पुत्रपौत्रवती
सद्गुणवती।।२७।।

हरितवर्ण
बनके बैठे पर्ण
मण्डूक राजा ।।२८।।

मृदु मृत्तिका
घोंघा बसन्त आए
जल ही भाए ।।२९।।

आर्द्रता तृण
वसुधा गर्भ कण
जीव उत्पत्ति ।।३०।।

सर्ग - ६

यादों की दस्तक

यादें हमारे व्यक्तित्व का एक प्रमुख अंग हैं। हम क्या याद रखते हैं और क्या भूल जाते है यह सब बहुत सारी चीजों पर निर्भर करता है। भाषा, दृष्टि, श्रवण, प्रत्यक्षीकरण, अधिगम तथा ध्यान की तरह स्मृति भी मस्तिष्क की एक प्रमुख क्षमता है। हमारे मस्तिष्क में जो कुछ भी अनुभव, सूचना और ज्ञान के रूप में संग्रहीत है, वह स्मृति के ही विविध रूपों में व्यवस्थित रहता है।

स्मृतियाँ यदि बचपन के दिनों से जुड़ी हों, तो दीर्घ काल तक मस्तिष्क पटल पर उभरती रहती हैं। विवाह के पश्चात, विवाह के पूर्व की यादें अनायास ही सताने लगती हैं। सावन की हरियाली महिलाओं में उत्साह और उमंग भर देती है। साथ ही पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। शादी के बाद पहला सावन हो तो उसकी बात ही निराली है। पिया के साथ पीहर भी सावन में याद आता है। झूले से भी कई यादें जुड़ी होती हैं। सखियाँ भी यादों के झरोखों से निकल आँखे गीली कर जाती हैं। माँ की थपकियाँ, लोरियाँ, झिड़कियाँ, शाबासियाँ सब यादों में ऐसे बसी हैं कि मिटाए नहीं मिटतीं।

शादी के बाद अपने ससुराल में सब कुछ मिल जाये मगर वो प्यार, वो अपनेपन का एहसास नहीं मिल पाता। सब कुछ पीछे छूट जाता है, मगर मायके की यादें ताजा रहती हैं। वो खुशनुमा पल हमेशा साथ रहते हैं। मन में एक कसक सी रहती है कि कब मायके जाएँ और पुराने दिनों को याद करें। माँ पिताजी का प्यार, बहन भाई की मीठी नोकझोंक, सखियों की छेड़छाड़, सब यादों में रच बस गया है। अनेक स्मृतियों में दबकर भी कुछ पुरानी यादें रह रह कर उभरती रहती हैं।

हाइकु : विस्मृति से स्मृति तक

हठी सावन
दामिनिया दमके
पीहर यादें ।।१।।

याद सुहानी
स्वप्न झूले की रानी
लाडो दीवानी ।।२।।

शैशव ठाँव
मन बसा जो गाँव
चले दो पाँव ।।३।।

वो सिलवटें
वो बिस्तर बिछौना
आखिरी गौना ।।४।।

नैहर गौना
ससुराल बिछौना
अंक में छौना ।।५।।

मिट्टी में खेल
बचपन की गैल
बातें बेमेल ।।६।।

माता की माया
कौन समझ पाया?
प्रेम समाया ।।७।।

पिता के गेह
बरसता था नेह
रक्षित देह ।।८।।

माँ की थपकी
लोरी किस्से कहानी
हुई पुरानी ।।९।।

माँ की शाबासी
प्यार भरी झिड़की
लगे अपनी ।।१०।।

जाल अनुरक्ति
मोहिनी महामाया
मातृ आसक्ति ।।११।।

राग विराग
आँचल अनुराग
मधु पराग ।।१२।।

गली चौबारे
रंग रंगे गुब्बारे
डोर से छूटे ।।१३।।

बीता जमाना
गुड़िया का विवाह
रस्में निभाना ।।१४।।

हाँफते दौड़े
आँखें मीचते छुपे
माँ के पीछे ।।१५।।

अम्बा मुस्काई
बेटी की अगुवाई
खुशियाँ छाईं ।।१६।।

ठेलम ठेल
घर घर का खेल
कट्टी औ मेल ।।१७।।

माँ की लाडली
चली पिया के गाँव
आलता पाँव ।।१६।।

मन की कली
त्रुटित अधखिली
इच्छा अधूरी ।।२१।।

नाजुक कली
अकेली हंसी रोई
कँटीली गली ।।२३।।

काल कल्पित
असमय त्रुटित
शाख झरित ।।२५।।

अतीत गति
अवरुद्ध प्रगति
अटकी मति ।।२७।।

अतीत द्वन्द्व
वर्तमान निर्द्वन्द्व
है अन्तर्द्वन्द्व ।।२६।।

वो मेरी मैया
उनकी मैं चिरैया
भूरी गौरैया ।।१८।।

बिसरी यादें
हिय तूफान उठे
नम थीं आँखें ।।२०।।

बिसरा भान
उठा भाव तूफान
अश्रु छलके ।।२२।।

स्मरण आया
वात्सल्य का आँचल
माँ तेरा साया ।।२४।।

स्मृति का घेरा
मस्तिष्क ही बसेरा
दर्द उकेरा ।।२६।।

यादों के पन्ने
प्रतिदिन की कथा
स्थविर प्रथा ।।२८।।

निज कल्पना
नित्य प्रति साधना
मन रंजना ।।३०।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **श्रीमती रंजना राजीव श्रीवास्तव**

जन्मतिथि- २७ अक्टूबर (प्रयागराज)

निवास - C-११०२ जयन्तीनगरी ५, बेसा, नागपुर ४४००३४

मोबाइल- ९०९६८०८१९१

ई.मेल - srivastavaranjana9@gmail.com

भाषाज्ञान- हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, मराठी एवं भोजपुरी।

सम्प्रति - ''भवन्स भगवान दास पुरोहित विद्या मन्दिर, श्रीकृष्ण नगर, नागपुर'' में संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं प्राथमिक प्रभारी के पद पर कार्यरत हैं साथ ही ''विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन'' के ''अंतरंग'' उपक्रम की सहसंयोजिका हैं।

उपलब्धियाँ और सम्मान- मानव संसाधन विकास मंत्रालय के द्वारा २०१४-१५ और २०१५-१६ में शिक्षा की दिशा में अद्वितीय योगदान के लिए प्रशंसा पत्र, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के द्वारा किशोर शिक्षण व कक्षा प्रबन्धन की मास्टर ट्रेनर का सम्मान, शब्द सुगन्ध सम्मान (२०१८), साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान (२०१९), शब्द कोविंद सम्मान (२०१९) एवं अन्तरा शब्द शक्ति गौरव सम्मान (२०१९) प्रदान किया गया।

प्रकाशन - महाराष्ट्र माध्यमिक शिक्षा परिषद की कक्षा पाँचवीं की पाठ्य पुस्तक में पाठ (२०१७), विद्यालय स्तर पर प्राथमिक कक्षाओं का अभ्यासक्रम (२०११ से प्रतिवर्ष), गीली माटी (काव्य संग्रह) (२०१८), हाइकु मंथन (साझा) (२०१९), अंजुली रंग भरी (साझा काव्य संग्रह) (२०१९), शाकुन्तलम् (खण्ड काव्य) (२०१९), वनबाला शकुन्तला (नाट्यरंग) (२०१९), अन्तर्नाद (काव्य संग्रह) (२०१९) तथा धुंध के पार (हाइकु : काव्य बोन्साई) (२०१९), चोका संग्रह (साझा) का प्रकाशन हुआ है।

सामाजिक कार्य- मोतियाबिंद निवारण शिविर का निःशुल्क आयोजन करवाया। रोटरी इंटरनेशनल व यूनीसेफ के साथ पोलियो मुक्त भारत के लिए कार्य किया। संस्कृत भाषा के उत्थान के लिए निःशुल्क वयस्क संस्कृत शिक्षण का आयोजन किया। ''गीली माटी'' काव्य संग्रह रचकर, विक्रय की धनराशि (२०,०००/-) से स्नेहांचल वेदना उपशमन केन्द्र, नागपुर में कैंसर पीड़ितों की आर्थिक सहायता की।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-037-7
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध